



प्रज्ञात समाचार

सच की आवाज, जनता के साथ

वर्ष:1 अंक: 11

सोमवार, 03 अगस्त से 09 अगस्त 2026

पृष्ठ:6

मूल्य: 2 रुपये

‘आंध्र के विकास का रनवे है नया एयरपोर्ट’

भोगपुरम में पीएम ने जनसभा को किया संबोधित

प्रज्ञात समाचार

विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश को आज नया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा मिले गया है। पीएम मोदी ने भोगपुरम हवाई अड्डे का उद्घाटन किया। इसके साथ ही सेमीकंडक्टर, बिजली और सड़क से जुड़ी कई बड़ी परियोजनाओं का शुभारंभ और शिलान्यास किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले के भोगपुरम में बने अल्लूरी सीताराम राजू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन किया। इस हवाई अड्डे के निर्माण पर करीब 5,000 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। आंध्र प्रदेश सरकार इस आधुनिक हवाई अड्डे को पूरे उत्तर आंध्र क्षेत्र के विकास के लिए बहुत अहम मान रही है।

सुबह करीब 11 बजे प्रधानमंत्री ने हवाई अड्डे के टर्मिनल भवन का उद्घाटन किया। इसके बाद वह राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर और मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबु नायडू के साथ हवाई अड्डे का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके बाद प्रधानमंत्री खुली छत वाले वाहन से जनसभा स्थल पहुंचे। यहां जनजातीय समुदाय को 13,500 से अधिक महिलाओं और छात्र-छात्राओं ने हिटसा नृत्य करके उनका भव्य स्वागत किया।

मुख्यमंत्री चंद्रबाबु नायडू ने क्या कहा?



भोगपुरम में आयोजित जनसभा में मुख्यमंत्री चंद्रबाबु नायडू ने कहा, दुनिया के सभी लोकतांत्रिक देश नए नेतृत्व की तलाश में संकट का सामना कर रहे हैं। भारत भाग्यशाली है कि उसके पास परखा हुआ नेतृत्व है। नरेंद्र मोदी जी ने मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में 25 साल पूरे किए हैं और असाधारण काम किया है।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में क्या कहा?

जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, आज का दिन आंध्र प्रदेश के विकास के लिए, स्वर्ण आंध्र के विजन के लिए बहुत अहम है। मुझे इस सुअवर पर उत्तर आंध्र की इस पवित्र भूमि पर आने का सौभाग्य मिला है।

उन्होंने कहा, आज यहां करीब 18 हजार करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ, लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है। हवाई अड्डे के साथ साथ ये परियोजनाएं आंध्र प्रदेश के सड़क संपर्क से भी जुड़ी हैं। इनमें उर्जा सुरक्षा से जुड़ी परियोजनाएं भी शामिल हैं। ये विकास कार्य इस बात के प्रतीक हैं कि आंध्र किस गति

से आगे बढ़ रहा है। मैं आप सभी को इन परियोजनाओं की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। उन्होंने आगे कहा, आज एक ओर विकास के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं, साथ ही हिमसा डांस का सांस्कृतिक रिकॉर्ड भी रचा गया है। 13 हजार से ज्यादा आदिवासी बहनों और बेटियों की प्रस्तुति, उनका उत्साह, उनका अनुशासन और आदिवासी संस्कृति का गौरव... ये दृश्य वाकई अद्भुत था। इसमें देश की विविधता की झलक भी थी और पीढ़ी दर पीढ़ी सहजकर रखी गई जनजातीय विरासत भी थी। मैं इस प्रस्तुति के लिए आप सभी का और विशेष रूप से मेरी आदिवासी बहनों-बेटियों का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। प्रधानमंत्री ने आगे कहा, अल्लूरी सीताराम राजू जी ने जिस धरती पर आदिवासी हितों के लिए अपना जीवन समर्पित किया, आज उसी धरती पर आंध्र प्रदेश के एक नए एयरपोर्ट की शुरुआत हो रही है।



प्रज्ञात समाचार

पुणे। पुणे में आयोजित एक समारोह में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। तिलक स्मारक ट्रस्ट ने उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक मामलों में लंबे समय से दिए गए योगदान के लिए सम्मानित किया। डोभाल ने अपने करियर के दौरान कई संवेदनशील क्षेत्रों में अहम जिम्मेदारियां निभाई हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को पुणे में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। तिलक स्मारक ट्रस्ट के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए अजीत डोभाल को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया है।

अजीत डोभाल को क्यों मिला पुरस्कार? 81 वर्षीय अजीत डोभाल ने

अजीत डोभाल को मिला लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार

अमित शाह ने किया सम्मानित



मिजोरम, सिक्किम, पंजाब और जम्मू-कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली हैं। उन्होंने इस्लामाबाद और लंदन स्थित भारतीय मिशन में राजनयिक भूमिका भी निभाई है।

डोभाल भारत के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हैं। वह भारत-चीन सीमा वार्ता में भारत के विशेष प्रतिनिधि भी रहे हैं। डोकलाम गतिरोध को सुलझाने के लिए हुए कूटनीतिक प्रयासों में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

कब शुरू हुआ था यह सम्मान? तिलक स्मारक ट्रस्ट ने बताया कि लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार की शुरुआत वर्ष 1983 में

हुई थी। यह सम्मान सबसे पहले समाजवादी नेता एस. एम. जोशी को दिया गया था। यह पुरस्कार हर वर्ष 1 अगस्त को स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि पर उन व्यक्तियों को दिया जाता है, जिन्होंने देश की प्रगति और विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया हो।

अब तक यह सम्मान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्रियों अटल बिहारी वाजपेयी, मनमोहन सिंह और इंदिरा गांधी, पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी तथा वरिष्ठ नेता शरद पवार सहित कई प्रतिष्ठित हस्तियों को दिया जा चुका है।

अमित शाह ने अण्णाभाऊ साठे को भी दी श्रद्धांजलि पुणे दौरे के दौरान केंद्रीय गृह

आज से बदल रहे कई बड़े नियम

जानें क्या-क्या होने जा रहे हैं बदलाव और क्या आपकी जेब पर पड़ेगा असर?

प्रज्ञात समाचार

नई दिल्ली। आज यानी 1 अगस्त 2026 से कई बड़े बदलाव होने जा रहे हैं जिनकी सीधा असर आपकी जेब पर पड़ता हुआ नजर आ सकता है। आप इस रिपोर्ट में आज से बदलने वाले नियमों के बारे में जान सकते हैं।

जब-जब नए महीने की शुरुआत होती है, तब-तब लोगों की नजर पहली तारीख पर रहती है। क्योंकि लगभग हर महीने की पहली तारीख से कुछ बदलाव जरूर हो जाते हैं। कभी रेलवे का कोई नियम लागू हो जाता है तो कभी कोई और बदलाव हो जाता है। इसी क्रम में आज यानी 1 अगस्त 2026 से भी कुछ बड़े बदलाव होने जा रहे हैं जिनके बारे में आप यहां जान सकते हैं।

पहला बदलाव

- आज से रेलवे के तत्काल टिकट बुकिंग नियम बदलेंगे
- दरअसल, पश्चिम मध्य रेलवे आज यानी 1 अगस्त से रिजर्वेशन काउंटरों पर तत्काल टिकटों की बुकिंग के लिए नया टोकन आधारित सिस्टम लागू करने जा रहा है
- इसका उद्देश्य आरक्षण काउंटरों पर भीड़ कम करना और टिकट बुकिंग को अधिक व्यवस्थित व पारदर्शी बनाना है
- नए नियम के तहत टोकन जारी करने का समय तत्काल बुकिंग शुरू होने के समय के अनुरूप रहेगा।
- एसी तत्काल के लिए सुबह साढ़े 8 बजे से सुबह 9 बजे और नॉन एसी के लिए सुबह 9 बजे से साढ़े 9 बजे तक टोकन मिलेंगे
- इसके बाद ही यात्री काउंटर से तत्काल टिकट बुक कर सकेंगे

दूसरा बदलाव

- अगर आपको ITR भरने में देरी हुई है, तो ये आपको आज से भारी पड़ सकती है
- दरअसल, चित्त वर्ष से जुड़ा इनकम टैक्स रिटर्न यानी आईटीआर समय पर दाखिल नहीं करने वालों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय वर्ष के लिए बिना जुमाने के इनकम टैक्स रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है, लेकिन जो लोग इस तारीख तक रिटर्न फाइल नहीं कर पाए हैं उन्हें आज यानी 1 अगस्त से बिलेटेड रिटर्न भरने पर आय के आधार पर भारी जुमाना देना होगा

तीसरा बदलाव

- आज से बैंकिंग शुल्क और क्रेडिट कार्ड के नियमों में भी बदलाव हो सकता है
- आज यानी अगस्त की शुरुआत के साथ कई बैंक क्रेडिट कार्ड रिवाइंड प्याइंट्स, लेट पेमेंट चार्ज, सर्विस फीस में बदलाव कर सकते हैं हालांकि, ये नियम सभी बैंकों पर लागू नहीं होते हैं। इसलिए इसके लिए अपने बैंक से संपर्क करें

चौथा बदलाव

- देश के बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों में ग्राहक सत्यापन को सुरक्षित बनाने के लिए 'सेटुल नो योर कस्टमर' यानी सीकेवाईसी 2.ड सिस्टम लागू किया जा रहा है
- C-KYC तहत ग्राहकों को 14 अंकों का एक यूनिक C-KYC नंबर मिलेगा। C-KYC का सबसे बड़ा फायदा ये होगा कि आपको हर बैंक, बीमा कंपनी या म्यूचुअल फंड में अलग-अलग KYC डॉक्यूमेंट देने की जरूरत नहीं होगी
- इस नए सिस्टम का उद्देश्य ग्राहकों की डट प्रक्रिया को पहले से अधिक सुरक्षित और आधुनिक बनाना है
- आज यानी 1 अगस्त से 19 किलो वाले कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की कीमतें कम हो गई हैं समाचार एजेंसी के अनुसार, सूत्रों ने बताया कि कोलकाता में कमर्शियल सिलिंडर के दाम 209 रुपये और दिल्ली में 202 रुपये घटाए गए हैं
- ऐसे में अब नई दरें लागू होने के बाद कोलकाता में 19 किलो वाले कमर्शियल एलपीजी सिलिंडर की कीमत 2872.50 रुपये हो गई है।

शुभेंद्रु अधिकारी की सुरक्षा पर खतरा?

बंगाल STF का बड़ा एक्शन, हमीम मंडल की करीबी अर्पिता झारखंड से गिरफ्तार

प्रज्ञात समाचार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल एसटीएफ ने जैश-ए-मोहम्मद के संदिग्ध सहयोगी हमीम मंडल से पूछताछ के बाद झारखंड के साहिबगंज से उसकी करीबी अर्पिता सरकार को गिरफ्तार किया है। जांच एजेंसी कथित आतंकी नेटवर्क और संभावित हनी-ट्रैप एंगल की जांच कर रही है।

पश्चिम बंगाल पुलिस के विशेष कार्य बल (एसटीएफ) ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की है। एसटीएफ ने झारखंड के साहिबगंज जिले से जैश-ए-मोहम्मद (जेएमए) के संदिग्ध हमीम मंडल की करीबी सहयोगी अर्पिता सरकार को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

कब हुई गिरफ्तारी?

सूत्रों के अनुसार, अर्पिता सरकार को शुक्रवार रात को गिरफ्तार किया गया। दरअसल, एसटीएफ के जांचकर्ताओं ने पूछताछ के दौरान हमीम मंडल से उसके संबंधों का खुलासा किया। मिली जानकारी के



आधार पर, एसटीएफ की एक टीम साहिबगंज गई और स्थानीय पुलिस की सहायता से गिरफ्तारी को अंजाम दिया। हमीम मंडल को शुक्रवार को पूर्वी बर्दवान जिले के बर्दवान कस्बे में एक आवासीय परिसर के फ्लैट से गिरफ्तार किया गया था। तलाशी के

दौरान, एसटीएफ कर्मियों ने पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंद्रु अधिकारी के कार्यक्रम और गतिविधियों से संबंधित आपतिजनक दस्तावेज बरामद किए, जिससे संदेह पैदा हुआ कि वह संभावित निशाना हो सकते थे।

दिल्ली में लक्ष्मी योजना का पोर्टल लॉन्च, 500 महिलाओं ने भरा फॉर्म



प्रज्ञात समाचार

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली लक्ष्मी योजना का पोर्टल लॉन्च किया। इस अवसर पर चार महिलाओं को उनके आवेदन कराने के बाद प्रमाणपत्र भी सौंपे गए। मुख्यमंत्री ने बताया कि यह योजना डेढ़ साल के संकल्प के बाद शुरू की गई है। उन्होंने इस पहल पर खुशी व्यक्त की। दिल्ली लक्ष्मी योजना की शुरुआत लक्ष्मी नगर और गीता कॉलोनी से हुई है। पोर्टल आज

से ही आम जनता के लिए उपलब्ध हो गया है। 500 महिलाओं ने भरा फॉर्म अब तक करीब 500 महिलाओं ने सफलतापूर्वक अपने फॉर्म भर दिए हैं। यह योजना महिलाओं के स्वावलंबन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके लिए 5100 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। अब तक दिल्ली लक्ष्मी योजना में कुल 10830 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। योजना में दो विकल्प



शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से भी जोड़ेगी योजना

सरकार का कहना है कि यह योजना केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं होगी। लाभार्थियों को बच्चों के स्कूल नामांकन, अपार और आभा आईडी, टीकाकरण, पोषण ट्रैकर, स्वयं सहायता समूह, कौशल प्रशिक्षण, स्वच्छता और पर्यावरण अभियानों से भी जोड़ा जाएगा, ताकि महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण सुनिश्चित हो सके।

योजना के तहत महिलाओं को दो विकल्प दिए गए हैं। पहले विकल्प में 1500 रुपये आरडी या एफडी में जमा होंगे और 1000 रुपये



सीबीडीसी (डिजिटल वॉलेट) में दिए जाएंगे, जिनका उपयोग सरकार द्वारा निर्धारित आवश्यक मर्चों पर किया जा सकेगा। दूसरे विकल्प में पूरी 2500 रुपये की राशि आरडी या एफडी में जमा कराई जा सकेगी। सरकार का उद्देश्य महिलाओं में बचत की आदत को बढ़ावा देना भी है। योजना का लाभ 21 से 60 वर्ष की उन महिलाओं को मिलेगा, जिनके परिवार की वार्षिक आय 2.50 लाख रुपये तक है। फिलहाल

योजना की अवधि तीन वर्ष तय की गई है। हालांकि आयकरदाता, जीएसटी रिटर्न दाखिल करने वाली महिलाएं, सरकारी कर्मचारी, तीन से अधिक जीवित बच्चों वाली महिलाएं, 2400 यूनिट से अधिक वार्षिक बिजली खपत वाले परिवार, सरकारी नौकरी वाले सदस्य या चारपहिया वाहन रखने वाले परिवार तथा आव्यवस्था रिकॉर्ड वाली महिलाएं योजना के दायरे से बाहर रहेंगी।

विस्तारवादी महत्वाकांक्षा

सोनम वांगचुक लद्दाख के जिन हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं और जिन क्षेत्रों, जैसे चांगथांग और पैगोंग त्सो के आस-पास का इलाका, की सुरक्षा का मुद्दा उठाने हैं, वे सैन्य और भौगोलिक दृष्टि से अत्यधिक संवेदनशील और महत्वपूर्ण हैं। यह क्षेत्र तिब्बत की सीमा से सटा हुआ एक विशाल पठार है, जो अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित है। सैन्य विज्ञान के स्थापित सिद्धांतों के अनुसार, ऊँचाई पर स्थित चौकियों पर नियंत्रण रखने वाले देश को कूटनीतिक, रणनीतिक और सैन्य तौरों से अत्यधिक बढ़त हासिल होती है। देखा जाय तो समकालीन वैश्विक राजनीति और सैन्य रणनीतियों में 'सलामी स्लाइडिंग' एक ऐसा स्थापित दृष्टिकोण है, जहाँ कोई विस्तारवादी महत्वाकांक्षी रखने वाला देश बिना किसी बड़े, व्यापक या अप्रत्यक्ष युद्ध के, अत्यंत गंभी गति से और छोटे-छोटे टुकड़ों में सीमावर्ती क्षेत्रों पर अपना प्रभाव या नियंत्रण बढ़ाने का प्रयास करता है। वर्तमान में भारत की उत्तरी सीमाओं, विशेषकर लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर यह रणनीति एक दीर्घकालिक और अत्यंत गंभीर सुरक्षा चुनौती बनकर उभरी है। विख्यात शिक्षाविद, नवप्रवर्तक और पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक का हालिया अपोलोन और उनके गांव 'उबले' सहित पूरे चांगथांग क्षेत्र से आ रही जमीनी मिट्टे से इस बात की और स्पष्ट इशारा करती है कि बीजिंग की नीति केवल एक तात्कालिक सीमा विवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरे रणनीतिक, आर्थिक, सांख्यिकीय और पारिस्थितिक हित छिपे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञों के विश्लेषण के अनुसार आवश्यक हो गया है कि लद्दाख के ये सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र चीन के लिए सामरिक रूप से क्यों इतने महत्वपूर्ण हैं, इसके पीछे बीजिंग का क्या भू-राजनीतिक गणित काम कर रहा है, और देश के आंतरिक नीतिगत नियंत्रणों तथा कूटनीतिक वार्ताओं का लद्दाखी सुरक्षा की इस वृहत्तर तस्वीर बनाया क्या और अदृष्ट संबंध हैं इन क्षेत्रों पर आर्थिक प्रभाव या प्रभुत्व बकासी भी चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी भारतीय सेना की अग्रिम गतिविधियों, रसद आपूर्ति मार्गों और लेह-लद्दाख को जोड़ने वाले रणनीतिक बुनियादी ढांचे पर चौबीसों घंटे प्रभावी निगरानी बना सकती है। यही कारण है कि इन सुदूर अग्रिम गांवों और पारंपरिक रूप से भारत के प्रभाव वाले क्षेत्रों पर धीरे-धीरे अपना नियंत्रण स्थापित करना बीजिंग की दीर्घकालिक सैन्य प्रथमिकताओं में शीर्ष पर रहा है, क्योंकि यह उन्हें किसी भी संभावित संघर्ष की स्थिति में एक रणनीतिक बहुत प्रदान करता है।

इस क्षेत्र में चीन की सैन्य और प्रशासनिक गतिविधि स्थापित अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के सीधे और बड़े उल्लंघन के बजाय एक क्रमिक, अदृश्य और बेहद दृश्य शक्ति प्रक्रिया के रूप में दिखाई देती है। सीमा पर रहने वाले स्थानीय लद्दाखी चरवाहा, जो मुख्य रूप से चांगपा समुदाय से आते हैं, सदियों से अपनी पसिमा बकरीयों और याकों को चराने के लिए इन पारंपरिक और ऐतिहासिक चारागाहों का उपयोग करते रहे हैं। चीनी गश्ती दल अक्सर इन निहत्थे और सीधे-सादे चरवाहों की आवाजों की बाधित करते हैं, उन्हें डराते हैं और सीमा विवाद का बहाना बनाकर पीछे धक्का को मजबूर करते हैं। जब स्थानीय आबादी विवादों या असुरक्षा से बचने के लिए इन चारागाहों पर जाना बंद कर देते हैं, तो वह क्षेत्र 'नो मैस लैंड' या विवादित क्षेत्र में बदली हो जाता है। इसके बाद के चरणों में, चीन इन खाली क्षेत्रों के निजकृते जेजे सी पक्की सड़कें, मोबाइल टॉवर, सैन्य शेड और नागरिक बस्तियां, तिब्बती चीनी शब्दावली में 'शियाओकांग विलेज' कहा जाता है, का निर्माण करके अपनी अनधिकृत स्थिति को एक स्थायी और वैध रूप देने का प्रयास करता है। सोनम वांगचुक और लद्दाख के स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने बार-बार उपग्रह चित्रों और प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से यह गहरी चिंता जताई है कि इस प्रक्रिया के कारण भारत के पारंपरिक चारागाहों का एक बड़ा हिस्सा धीरे-धीरे हमारी सुलभ गश्त और नागरिक नियंत्रण के दायरे से हारा होता जा रहा है। चीन के इन आक्रामक कदमों के पीछे केवल सैन्य विस्तारवाद ही नहीं, बल्कि भविष्य की 'संसाधन सुरक्षा' भी एक बहुत बड़ा आर्थिक कारक है। लद्दाख और तिब्बत का यह संपूर्ण भूभाग दुनिया के 'तीसरे ध्रुव' के रूप में जाना जाता है, जो मीटो पानी के विशाल ग्लेशियरों और अत्यंत महत्वपूर्ण दुर्लभ खनिजों का प्रमुख स्रोत है। सिंधु और उसकी प्रमुख सहायक नदियों के उद्गम और प्रवाह क्षेत्र इसी भूभाग से गहरे जुड़े हैं। इस क्षेत्र के जल स्रोतों और ग्लेशियरों पर कड़ा नियंत्रण स्थापित करके चीन पूरे दक्षिण एशिया की जल-भूराजनीति में एक निर्णायक और अधिकारवादी भूमिका हासिल करना चाहता है, जिससे वह भविष्य में भारत और पाकिस्तान जैसे निचले प्रवाह वाले देशों पर एक जल-अस्त्र के रूप में दबाव बना सके। इसके साथ ही, चांगथांग का यह विशिष्ट क्षेत्र दुनिया के सबसे महंगे और सर्वश्रेष्ठ 'परमोना जून' का एकमात्र मुख्य उत्पादक है। चीनी दबाव के कारण जब भारतीय चरवाहों को अंतिम सीमाओं पर स्थित समृद्ध चारागाहों से पीछे हटना पड़ता है, तो चारा न मिलने के कारण परमोना बकरीयों की आबादी पर संकट आ जाता है, जिसका सीधा नकारात्मक और विनाशकारी असर लद्दाख की स्थानीय अर्थव्यवस्था, कस्मरी के हस्तशिल्प और भारत के अंतर्राष्ट्रीय टेक्स्टाइल उद्योग पर पड़ता है। वर्ष 2020 के गलवान घाटी के हिंसक संघर्ष के बाद से दोनों महाशक्तियों के बीच संबंधों में एक लंबा सैन्य और कूटनीतिक गतिरोध बना रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में निरंतर जारी द्विपक्षीय वार्ताओं और कूटनीतिक प्रयासों के कारण कुछ सकारात्मक प्रगति देखी गई है। डेपसांग और डेनचोक जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण और विवादित पथर्ष बिंदुओं से सैन्य विस्थापन और गश्त व्यवस्था को पुरानी स्थिति में बहाल करने पर दोनों पक्षों के बीच कूटनीतिक समझौतों का एक नया मिलसिला शुरू हुआ है। भारत और चीन के बीच उच्च स्तरीय वार्ताओं, दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की बैठकों और सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए स्थापित कार्य दल (WMCC) के माध्यम से कूटनीतिक चैनलों को फिर से पूरी तरह सक्रिय किया गया है।

कटाक्ष सुरेश मिश्रा

रक्षा कर पाए नहीं, निज दल का श्रीमान
मुस्लिम चरणों में झुके, और किए गुणगान
और किए गुणगान, रहे जो राम विरोधी
चलते उनके साथ, सनातन के अवरोधी
कह सुरेश कविराय राम को देत सुरक्षा
जो अपने सांसद तक की कर सके न रक्षा

आज का कार्टून

सिर्फ मेड इन अमेरिका
रोबोट्स ही सेफ हैं...

खाड़ी देश

कनान्जा

और प्रासंगिकता को सीमित करना होगा। यह भारत की जीवरेखा, अर्थव्यवस्था की रीढ़ और सामाजिक-सांस्कृतिक एकता का सबसे बड़ा सूत्रधार है। प्रतियंदन करोड़ों यात्रियों को उनका मंजिलों तक पहुंचाने और लाखों टन माल की दुलाल करने वाली भारतीय रेल आज एक ऐतिहासिक बदलाव के दौर से गुजर रही है। परंपरागत डीजल इंजनों से शुरू हुआ यह सफर आज पूरी तरह विद्युतीकरण और अब स्वदेशी 'हाइड्रोजन प्पल सेल तकनीक' तक पहुंच चुका है। हाल ही में 17 जुलाई, 2026 को भारत की पहली हाइड्रोजन चालित ट्रेन के व्यावसायिक परिचालन की शुरुआत ने न केवल देश के रेल इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ा है, बल्कि भारत को दुनिया के उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में ला खड़ा किया है जो शून्य-उत्सर्जन हरित परिवहन का नेतृत्व कर रहे हैं। भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन केवल धातु और तकनीक का एक ढाँचा नहीं है, बल्कि यह भारत के आत्मनिर्भर संरक्षण, वैज्ञानिक प्रगति और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक है। इसके 1,200 किलोमीटर से अधिक का सफल सफर और हजारों लीटर कार्बन डीऑक्साइड की बचत यह साबित करती है कि भारत अब वैश्विक नवाचारों का केवल अनुसरण करने वाला देश नहीं रहा, बल्कि भविष्य की हरित तकनीकों का नेतृत्व करने में सक्षम तकनीकी महाशक्ति बन रहा है। जैसे-जैसे यह तकनीक परिपक्व होगी और देश भर के अन्य मार्गों पर इसका विस्तार होगा, भारतीय रेल न केवल देश की यात्रा को सुगम बनाएगी बल्कि 'विकासित भारत @2047' के सपने को साकार करने में सबसे सशक्त माध्यम सिद्ध होगी। देश में पहली हाइड्रोजन ट्रेन शुरू करके भारत अब हाइड्रोजन चालित रेल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया के जर्मनी, जापान, चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे तकनीकी रूप से उन्नत देशों के विशिष्ट वैश्विक क्लब में आधिकारिक रूप से शामिल हो गया है। जहां जर्मनी ने विश्व की पहली व्यावसायिक हाइड्रोजन ट्रेन चलाई थी,

शही भारत का ध्यान इस तकनीकी को स्वदेशी
 द्वारा (आरडीएसओ) और स्थानीय विनिर्माण
 श्रष्टा अत्यन्त फायदेमन्दी बनाने पर केंद्रित है।
 भारत की इस सफलता से दक्षिण एशिया और
 अन्य विकासशील देशों के लिए भी कम लागत
 वाले स्वच्छ परिवहन का मार्ग प्रशस्त होना
 भारत में पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन का पहला
 व्यासायिक परिचालन हाल ही में उदर लेवें,
 दिल्ली मंडल के अंतर्गत हरियाणा के जीवें-
 सोनीपत मार्ग पर शुरू किया गया है। करीब 89
 किलोमीटर लंबे इस मार्ग पर ट्रेन ने
 सफलतापूर्वक अपनी दैनिक यात्राएं शुरू की हैं।
 इस पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत ने यह साबित
 कर दिया है कि भारत अब जटिल तकनीकों के
 आयात पर निर्भर रहने के बजाय उन्हें स्वयं
 विकसित करने में सक्षम है। वैसे भी भारतीय
 रेल के विशाल नेटवर्क 68 हजार किमी से
 अधिक रूट के साथ दुनिया के चौथे सबसे बड़े
 रेल नेटवर्क में शुमार है, जहां प्रतिदिन 2.2 से
 2.5 करोड़ यात्री ट्रेनों में यात्रा करते हैं। भारत में
 रेलवे ट्रेक का विद्युतीकरण ब्रॉड गेज नेटवर्क का
 95 प्रतिशत से अधिक विद्युतीकरण पूरा हो चुका
 है। आधुनिक युग के रेल नेटवर्क में सुरक्षा
 प्रणाली को लेकर भारतीय रेलवे स्वदेशी
 ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन प्रणाली 'कवच' का
 तेजी से कार्यान्वयन करने में जुटा है। हाइड्रोजन
 ट्रेन में परंपरागत इंजनों की तरह किसी भी ईंधन
 को जलाना नहीं जाता। इसके बजाय, ट्रेन में

प्रोटीन एसचेंज मेम्ब्रेन (पीईएम) फ्यूल सेल वाली होते हैं। देन पर रखे सिलेंडर से मिलने वाली हाइड्रोजन गैस और हवा से ली जाने वाली ऑक्सीजन के बीच फ्यूल सेल के भीतर एक नियंत्रित रासायनिक प्रतिक्रिया होती है। इस प्रक्रिया से सीधे ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे सेल की ट्रेकन मोटर चलती है। खासबात ये है कि इस पूरी प्रक्रिया का एकमात्र उप-उत्पाद जलवाष्प और ऊष्मा हैं। देन के उत्पादों से धुआँ, कार्बन डाइऑक्साइड या नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी विषैली गैसें बिल्कुल नहीं निकलती। जहाँ तक इस देन की तकनीकी विशेषताओं की बात है उसकी कोच संरचना है 10 डिब्बों वाली एक आधुनिक ट्रेकेटेस्ट है, जिसके दोनों सिरों पर दो 'हाइड्रोजन ड्राइविंग पावर कार' लगी हैं। इस देन में 1,200 किलोवाट क्षमता के दो प्रोपल्सर इंजन लगे हैं जो कुल 2,400 किलोवाट की शक्ति पैदा करते हैं। हाइब्रिड ऊर्जा भंडारण के रूप में इसमें तत्वगुण और उन्नत ताले समय ऊर्जा को सहेजने के लिए इसमें ब्रेक लिफ्टिंग आयरन फॉस्फेट बैटरीयें लगाई गई हैं। यह देन लगभग 2,600 यात्रियों को एक साथ ले जाने में सक्षम है। इसकी डिजाइन स्पष्ट 110 किमी/घंटा है, जबकि फिलहाल इसे 75 किमी/घंटा की परिचालन गति पर चलाया जा रहा है। इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सुसुझा प्रणाली की दृष्टि से सौर या हाइड्रोजन प्लांटों वाली हाइड्रोजन देन की जाँच रूप से चलाने के

एक केवल ट्रेन बनाना ही काफी नहीं था, बल्कि उसके लिए संपूर्ण 'होकोसिस्टम' विकसित करना आवश्यक था। जींद रफ्यूलिंग व स्टोरेज फैसिलिटी भारतीय रेल ने हरियाणा के जींद में देश का पहला सर्मापिट हाइड्रोजन स्टोरेज और रफ्यूलिंग प्लांट स्थापित किया है। जहां तक भंडारण क्षमता का सवाल है इस संयंत्र में लगभग 3,000 किलोग्राम कंप्रेस्ड ग्रीन हाइड्रोजन को सुरक्षित रखने की व्यवस्था है। इस बुनियादी ढाँचे को 'पेट्रोलियम एंड एक्सप्लोसिव्स सेफ्टी ऑर्गनाइजेशन' द्वारा लाइसेंस प्राप्त है तथा जर्मनी का अंतरराष्ट्रीय एंजनी द्वारा थर्ड-पार्टी सुरक्षा प्रमाणित किया गया है। हाइड्रोजन एक अत्यधिक ज्वलनशील गैस है, इसलिए इसकी सुरक्षा के लिए उच्च स्तरीय ऑटोमेटेड सुरक्षा कवच तैयार किए गए हैं। संसार व लीक डिटेक्टर: दैनिक और रफ्यूलिंग प्लांट दोनों जगह हाइड्रोजन रिसाव, फ्लेम डिटेक्टर और स्मोक डिटेक्टर लगाए गए हैं। किसी भी आपात स्थिति या तापमान में असामान्य वृद्धि का पता चलते ही स्वचालित शट-ऑफ सिस्टम ईंधन की आपूर्ति को तुरंत बंद कर देता है। इस ट्रेन के नियमित तकनीकी रखरखाव के लिए दिल्ली स्थित शक्करबती में एक विशेष डिपो तैयार किया गया है। डीजल और ईंधन की भारी बचत एक पारंपरिक डीजल मरीचपल यूनिट (डेमू) ट्रेन अपनाने की नवीनकाल में लाखों लीटर डीजल को खपत करती है। हाइड्रोजन ट्रेन के आने से अल्पतम 3,000 लीटर से अधिक डीजल की खपत में प्रतिदिन की बचत का मार्ग प्रशस्त हुआ है। वहीं कार्बन फुटप्रिंट में भारी कमी आएगी, जो सीधे तौर पर भारत के पेरिस जलवायु समझौते और 'राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन' के लक्ष्यों को पूरा करती है। वहीं गैर-विद्युतीकृत और हरिटेज मार्गों का उद्धार की दृष्टि से रेलवे नेटवर्क के पवर्तीय और दूरस्थ क्षेत्र जैसे हिस्सों पर जहाँ बिजली की आवरहेड लाईन बिल्खाना भौगोलिक रूप से बेहद कठिन य चर्चा है, वहीं हाइड्रोजन ट्रेनें सबसे मुभीर साबित होगी।

● साभार

डीजल से हाइड्रोजन तक: भारतीय रेलवे का बदलता स्वरूप

हाल ही में 17 जुलाई, 2026 को भारत की पहली हाइड्रोजन चालित ट्रेन के व्यावसायिक परिचालन की शुरुआत ने न केवल देश के रेल इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ा है, बल्कि भारत को दुनिया के उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में ला खड़ा किया है जो गहन-उत्सर्जन हस्तित परिवहन का नेतृत्व कर रहे हैं।

आगामी चुनावों पर कॉकरोच आंदोलन का पड़ेगा असर!

12 साल पुरानी केंद्र की मोदी सरकार, मामला चाहते हैं—एनआरआई प्रोटेक्टर का हो या संस्मर में बीच सत्र से 146 विपक्षी सांसदों का समर्थन या फिर राहुल गांधी की सदस्यता खतम कर दी गई हो, किसी विरोध के आगे कमजोर पड़ते नहीं दिखी। किसी मंत्री पर इस्तीफे का दबाव बना, तो कहा गया—'भैया हाथ इस्तीफे नहीं होते।' लेकिन 12 साल में पहली बार कैंकरोकर पार्टी ने मंत्री धर्मेश प्रधान का इस्तीफा ले लिया। इस पूरे घटनाक्रम से कौन-से बड़े डेंडल पड़े और क्या सरकार इससे उबर पाएगी।

उत्तर प्रदेश, पंजाब और उत्तराखंड की विधानसभाओं का कार्यकाल 2027 तक मंथन हो रहा है। यहां फरवरी-मार्च 2027 में चुनाव हो सकते हैं। तो इन चुनावों पर इस आंदोलन का क्या इंतजार लगेगा, इसकी पड़ताल करती यह रिपोर्ट। प्रोटेस्ट के दौरान सरकार ने राहुल गांधी या विपक्ष से कोई बातचीत नहीं की। उसने सीजेपी के युवा नेताओं के साथ डील करके उनका मांगें मान लीं ताकि विपक्ष इससे अपनी जीत न दिखा सके जबकि कांग्रेस कुछ पार्टी को कोई चुनावी मंच नहीं, बल्कि यूथ प्लेटफॉर्म हैं। इसलिए सीधे तौर पर बीजेपी को कोई चुनावी मुकाम न हुआ नहीं दिखता। विपक्ष को तब फायदा हो सकता था, जब उसने मांगें न मानी होतीं। 2015 में विदेशी सरकारी मंत्री सुष्मा स्वराज और राजस्थान की सीएम वसुंधरा राजे पर आरोप लगे कि दोनों ने लंदन में रह रहे भाग्यो ललित मोदी की पुर्तगाल जानने में मदद की है। सुष्मा और वसुंधरा को इस्तोफी के साथ गाने लाली। तब 24 जून 2015 को केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने एक बयान दिया- 'नहीं... नहीं, इसमें (मोदी सरकार में) मंत्रियों के त्यागपत्र नहीं होते हैं, बैप। यूपीए



सकार नहीं है, ये एनडीए सरकार है' राजनाथ का यही बयान बीजेपी सरकार का अधोषिक्त निम्न बन गया। मोदी सरकार में किसी मंत्री के इस्तीफा न देने का इतिहास रहा है, सिर्फ एमजे अकबर का मामला छोड़ देंगे तो। 2018 में #मिड मामले में एम.जे. अकबर ने विदेश राज्यमंत्री के पद से इस्तीफा दिया था। पीएम मोदी ने राजनीति में अपनी ऐसी छवि बनाई कि उन्हें कोई भी किसी तरह से दबाव में नहीं ला सकता। दबाव में उनसे कोई काम नहीं करा सकता लेकिन मधेंद्र प्रस्थान के इस्तीफे से इस छवि में कहीं-न-कहीं असर पड़ा है। कॉंकरोज जतना पार्टी के प्रोटेस्ट पर धर्मद्रु ध्यान ने खुद कहा कि ये दहशतवादी को बी बांटना है। लोकतांत्रिक रूप से खारिज किए जा चुके लोग भेष बदलकर सिस्टम के पीछे लगे हैं और उन लोगों के लिए नारे लगाते हैं, जो देश को बांटना चाहते हैं सरकार अक्सर निवेशकों को सांप्रदायिक बनाकर, एंटी-नेशनल कह कर या विदेशी फंडिंग बताकर बहुत अच्छे से हैटल कर लेती है। लेकिन धर्म और आस्था से दूर जो मामले होते हैं, वहां सरकार को हैडलिंग में समस्या आती है। यानी यहां हिंदू-मुस्लिम और राष्ट्रवाद बाइनरी फ्रेल होना भी बीजेपी सरकार के लिए डेंट है। 20 जुलाई दिल्ली पुलिस और राँपड़ पक्शन फॉर्स ने सीजेपी के संसद मार्च पर लाठीचार्ज

और आंसू गैस के गोले दोगे। जंतर-मंतर सजा स्टेज भी उखाड़ दिया। उसके बाद भी प्रदर्शन जारी रहा, यानी बल का नही आया। इसके बाद यानी सरकार ने बातचीत का रास्ता चुना। केंद्रीय मंत्री गोपी नड्डा ने प्रदर्शनकारियों और सोनम वांग्चुक से बातचीत शुरू की। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने राहुल गांधी और विश्वस से बातचीत की। पीएम मोदी ने भी इंस्टाग्राम पर वीडियो पोस्ट किए। लेकिन धर्मरक्षक प्रथान के इस्तीफे से कम में मानने को कोई तैयार नहीं था। यानी अगर सरकार विरोध की आवाज में फैसल कान्टिन्यूटी और मास-सपोट हो तो उसने बाबुपूर्वक या राजनीतिक उयान बजाये से दरकिनार नहीं किया जा सकता। प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर लाठी चलाई। पैलेट गन चलाई। फिर भी युवा पीछे नहीं हटे। इससे सरकार ने दबाव बना, जिसे छात्रों के सरकार पर महसूस किया और छात्रों के दबाव में आबिष्टकार धर्मरक्ष प्रथान को इस्तीफा देना पड़ा। भारत में आधी आबादी 29 साल से कम उम्र की है। सबसे ज्यादा आबादी वाले देश में शिक्षा या रोजगार के से जुड़े विवाद सीधे युवाओं और उनके परिवारों को प्रभावित करते हैं। धर्मरक्ष प्रथान के इस्तीफे में देरी से छात्रों में यह संदेश गया कि सरकार उनके भविष्य को लेकर संवेदनशील नहीं है। या जवाबदेही तय करके, 2019 करती है। दरअसल, 2014, 2019

करते हैं।
41.4% लोगों का मानना है कि इस तरह प्रदर्शन से बीजेपी और एनडीए सदस्यियों को नुकसान होगा। 2014 में मोदी सरकार के आने के बाद से कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष पर कमजोरी बरबस होने का ठप्पा लगता रहा है। विपक्ष के पास तमाम मुद्दे और लोकियन कुछ खास नहीं कर सका जैसे- सीएए औरआरसी का मुद्दा, 14वें वित्त बजट का मुद्दा, आदि। विपक्षी सांसदों का सम्प्रेषण, राहुल गांधी की सरसयत्ता रहूँ होना। भारत के राजनीतिक इतिहास में पहली बार 20 जुलाई को लोकसभा और राज्यसभा में नेता प्रविपक्ष राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड्गे ने विपक्षी सांसदों के साथ प्रधानमंत्री आवास के बाहर धरना दिया। सरकार को भी फौरन उन्हें मानने पहुँचना पड़ा। मोदी प्रधान जैसे कद्दावर बीजेपी नेता गृहमंत्री अमित शाह के कर्तव्यियों में एक और सांसदों के कैबिनेट मंत्री के इस्तीफा पिलिखे 12 साल में पहली बार विपक्षी के लिए एक बड़ी सिबिलिजिज की जैसा है। 25 जुलाई को मोदी सरकार और सीजेपी ने मॉडिज के बाद जॉइन्ट प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें केंद्रीय मंत्री जेपी नट्टा ने प्रदर्शनकारियों की मांगों पर हामी भरने और सीजेपी ने प्रदर्शन खत्म करने का एलान किया।

● साधारण

जगदीश आफले-राम मंदिर ट्रस्ट के पहले सचिव नियुक्त

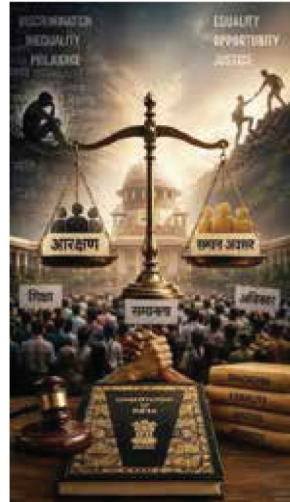
अ योध्या की श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने राम मंदिर के प्रशासनिक ढाँचे को मजबूत करने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है। ट्रस्ट ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी की नियुक्ति से पहले जगदीश आफले को पहला सचिव नियुक्त किया है। जगदीश आफले की नियुक्ति पर 2 सितंबर को होने वाली ट्रस्ट की बैठक में औपचारिक मुहर लगेगी। इसके साथ ही जगदीश आफले ट्रस्ट के भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) खाता को अधिकृत हस्ताक्षरताओं भी बनाया गया है। काशी समय से राम मंदिर में दान चोरी विवाद को लेकर ट्रस्ट की कार्यप्रणाली में ब बदलाव किया गया है और सचिव की नियुक्ति को भी इसी प्रक्रिया का हिस्सा माना गया है। राम मंदिर ट्रस्ट ने पहले ही सीईओ, सचिव और प्रवक्ता जैसे नए प्रशासनिक पद बनाने का फैसला किया था लेकिन सीईओ की नियुक्ति की प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हो सकी है। ट्रस्ट के अनुसार सीईओ पद के लिए करीब 5200 आवेदन मिले हैं। इन आवेदनों की जाँच और चयन की प्रक्रिया रीटायर्ड सिस्टम प्रमोद कोहली की अध्यक्षता वाली समिति कर रही है। इस प्रक्रिया में समय लगाना तय है। ऐसे में प्रशासनिक काम प्रभावित न हो, इसलिए पहले सचिव की नियुक्ति कर दी गई। जगदीश आफले महाराष्ट्र के पुणे के रहने वाले हैं। वह पेशे से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हैं। जगदीश आफले ने आईआईटी मुंबई से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बीटेक और एमटेक की पढ़ाई की है। इसके बाद उन्होंने कई बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम किया है। यूरोप और अमेरिका की कंपनियों में भी उन्होंने लंबे समय तक अपनी सेवाएँ दी हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद वह भारत लौट आए। जब राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हुआ तो जगदीश आफले ने अपने परिवार अनुभव को मंदिर निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने बिना किसी वेतन के प्रोजेक्ट मैनेजर की जिम्मेदारी संभाली। मंदिर निर्माण की निगरानी और परियोजना प्रबंधन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जानकारी के अनुसार जगदीश आफले बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे हैं। राम मंदिर निर्माण का फैसला आने के बाद संघ ने उन्हें परियोजना प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी थी। तभी से वह अयोध्या में हरकत मंदिर निर्माण से जुड़े सभी प्रमुख कार्यों की देखरेख कर रहे हैं। वह तीर्थ क्षेत्र भवन में अपनी पत्नी के साथ रह रहे हैं। उनके अनुभव और लंबे जुड़ाव को देखते हुए ट्रस्ट ने अब उन्हें सचिव की नई जिम्मेदारी सौंपी है। जगदीश आफले को केवल सचिव ही नहीं बनाया गया है। उन्हें ट्रस्ट की ओर से भारतीय स्टेट बैंक में अधिकृत हस्ताक्षरताओं भी नियुक्त किया गया है। पूर्व महासचिव चंचल राय और ट्रस्टी डॉ अनिल मिश्रा के पद छोड़ने के बाद बैंक खातों के संचालन को लेकर नई व्यवस्था की जरूरत थी। इसी कारण ट्रस्ट ने उनका नाम एसबीआई को भेजा। शुरुआती दौर में कानूनी प्रक्रियाओं के चलते कुछ देरी हुई लेकिन बाद में नया प्रस्ताव भेजे जाने के बाद बैंक ने मंजूरी दे दी। अब ट्रस्ट के खातों का संचालन सामान्य रूप से शुरू हो गया है। जानकारी के अनुसार 6 जुलाई को हुई ट्रस्ट की बैठक में तत्कालीन महासचिव चंचल राय और ट्रस्टी डॉ अनिल मिश्रा के इस्तीफे स्वीकार किए गए थे। इसके बाद अधिकृत हस्ताक्षरताओं में बदलाव का फैसला लिया गया।

● साभार

आरक्षण, वंशवाद और बराबरी का सवाल

देश में आरक्षण को लेकर बहस एक बार फिर उफान पर है। कहीं इसे सामाजिक न्याय का आधार बताया जा रहा है, तो कहीं इसे व्यवस्था में जड़ पकड़ चुकी वेवादादी और जातिवादी संरचना का जवाब। सच यह है कि यह बहस केवल सरकारी नौकरियों तक सीमित नहीं है, बल्कि अब शिक्षा, स्वास्थ्य, मीडिया, न्यायपालिका, प्रशासन, राजनिति, खेल, फिल्म और यहाँ तक कि धार्मिक-प्रशासनिक ढाँचों तक फैल चुकी है। सवाल यह नहीं है कि आरक्षण होना चाहिए या नहीं; असली सवाल यह है कि क्या देश के हर क्षेत्र में अक्सर, योग्यता और हिस्सेदारी का सन्तुलन सचमुच है? आलोचकों का कहना है कि यदि समाज के कुछ वर्गों को उनके ऐतिहासिक और आर्थिक पिछड़ेपन के कारण आरक्षण दिया गया, तो फिर उसी न्याय के सिद्धान्त के तहत पूछा जाना चाहिए कि क्या निजी और सार्वजनिक जीवन के उन तमाम क्षेत्रों

में भी समान अवसर मौजूद हैं, जहाँ वर्षों से एक ही तरह की पात्रियाँ, जातीय और सामाजिक पकड़ बनी हुई हैं। मन्दिरों के प्रवचन से लेकर अदालतों की ऊँची पीठ तक, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से लेकर बड़े मीडिया घरानों और फिल्म उद्योग तक, संघर्षवादी की जड़ें कमजोर नहीं पड़ीं। अनेक पद ऐसे हैं, जहाँ योग्यता से अधिक नेटवर्क, पहचान और विरासत काम करती हैं। यही कारण है कि आधुनिक-विशेषों का आवाज अब केवल नाराजगी नहीं, बल्कि एक बड़े असन्तोष का रूप लेने लगी है। यह असन्तोष इस 'प्रश्न' के केन्द्रित है कि यदि देश में 'जिसकी जितनी भागीदारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी' का सिद्धान्त वास्तविकता में लोकतंत्र का आधार है तो वह सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों तक सीमित क्यों रहे? यदि 10 प्रतिशत के लिए आर्थिक रूप से तय 'ईडब्ल्यूएस' जैसी व्यवस्था सम्भव है, यदि कर्म क्षेत्रों में परोक्ष या अपरोक्ष वंशवाद



कोटा चलता है, तो फिर बाक़ी वज्जित समाज के लिए भी पारदर्शी और समान अवसर क्यों नहीं? लेकिन इस बहस को केवल प्रतिरोध की भाषा में नहीं समाधान की भाषा में भी आगे बढ़ाना होगा। आरक्षण का मूल उद्देश्य सदियों से वज्जित समुदायों को मुख्यधारा में

लाना था। यह केवल आर्थिक गरीबी का नहीं, सामाजिक असमानता, छुआछूत, बहिष्कार और संरचनात्मक भेदभाव का प्रश्न भी रहा है। इसलिए आरक्षण को एक झटके में समाप्त करने की माँग, बिना सामाजिक समानता की ठोस नीति रखे, नई तनाव और नयी अन्यायपूर्ण स्थितियाँ पैदा कर सकती है। एक और वंशवादी और कृत्रिम विशेषाधिकारों पर चोरी होनी चाहिए, दूसरी सामाजिक अन्याय की ऐतिहासिक आवश्यकता की नहीं भुलाया जाना चाहिए। वास्तविक सुधार वहीं से शुरू होना चाहें शिक्षा की असमानता टूटगी जहाँ अमीर और गरीब के बच्चे के लिए शिक्षा के मैदान बराबर नहीं हैं। एक और महंगे स्कूल, इंग्लिश मीडियम, निजी कोचिंग और संसाधनों की भ्रमण है; दूसरी ओर सरकारी स्कूलों में शिक्षक-घाटे, पुरानी किताबें और असमान व्यवस्था। जब प्रारम्भिक शिक्षा ही असमान होगी, तब प्रतियोगिता की भी निष्पक्ष नहीं हो

सकती। इसलिए “एक देश, एक
किताब” जैसी अवधारणा पर गम्भीर
सर्चा होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में
मानवता, शिक्षक की न्यूनतम
विषयवस्तु योग्यता, और स्कूलों में
मानव शैक्षिक मानक और नियमों कि
जाने चाहिए। इसी तरह शिक्षकों की
नियुक्ति भी केवल औपचारिकता न
है। हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान और अन्त-
विषयों के शिक्षक के लिए विषय-
विशेष योग्यता अनिवार्य है। एक ही
शिक्षक से कई विषय पढ़वाना
विशेषकर छोटे स्कूलों में, बच्चों के
अभिव्यक्ति से सम्बन्धी है। यदि देश को
प्रतिस्पर्धी, आत्मनिर्भर और ज्ञान-
सम्पन्न बनाना है, तो प्राथमिक स्तर से
लेकर उच्च शिक्षा तक गुणवत्ता पर
समान रूप से ध्यान देना होगा
कोचिंग उद्योग का वर्चस्व तभी टूटेगा
जब स्कूल स्वयं मजबूत होंगे। एक
और बड़ा मुद्दा है जनप्रतिनिधियों और
प्रशासकों की योग्यता।

● साभास



57 की उम्र में रवि किशन ने घटाया 18kg वजन

मशहूर एक्टर और सांसद रवि किशन अक्सर किसी न किसी वजह से सुर्खियों में रहते हैं। इस बार उनकी चर्चा किसी फिल्म, वेब सीरीज या राजनीति को लेकर नहीं, बल्कि उनके जबरदस्त बॉडी ट्रांसफॉर्मेशन को लेकर हो रही है। 57 साल के रवि किशन ने हालिया बात खुलासा किया कि उन्होंने सिर्फ सही खान-पान और एक्सरसाइज की मदद से 18 किलो वजन कम किया है, उन्होंने बताया कि उनका वजन 90 किलो तक पहुंच गया था, जिसे अब घटाकर 72 किलो कर लिया है। रवि किशन के हालिया ट्रांसफॉर्मेशन ने हर किसी

रवि किशन की फिटनेस का राज

रवि किशन ने बताया कि उनके अलग-अलग प्रोजेक्ट्स की वजह से उन्हें अपने शरीर पर काफी काम करना पड़ा, उन्होंने कहा, “लापता लेडीज” के लिए मुझे थोड़ा भारी दिखना था। ‘मिज़पुर: द मूवी’ में मैं काफी लीन नजर आऊंगा, जबकि ‘नागजिला’ में मेरी बॉडी बेहद फिट होगी। 50 की उम्र के बाद वजन कम करना आसान नहीं होता, लेकिन अगर खान-पान सही हो तो काफी फर्क पड़ता है। फिटनेस में 70-80 फीसदी योगदान आपकी डाइट का होता है और बाकी एक्सरसाइज का।”

करिश्मा तन्ना बनीं मां

करिश्मा तन्ना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के जरिए फैस के साथ यह खुशखबरी साझा की। खबर सामने आते ही टीवी और फिल्म इंडस्ट्री के तमाम सितारों के साथ-साथ फैस ने भी इस जोड़े को ढेरों बधाइयां देना शुरू कर दिया है। करिश्मा तन्ना ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक बेहद प्यारा पोस्ट साझा करते हुए अपने दिल की खुशी व्यक्त की। उन्होंने लिखा, “गुरु पूर्णिमा के पवित्र दिन पर जन्म... हमारा सबसे बड़ा आशीर्वाद यहां है। 29 जुलाई हमारी दुनिया में तुम्हारा स्वागत है, छोटे नवाब। - करिश्मा और वरुण” इस पोस्ट के सामने आते ही सोशल मीडिया पर बहाइयों का ताता लग गया। फैस कमेंट सेक्शन में नन्हे बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की दुआएं मांग रहे हैं। करिश्मा तन्ना के इस पोस्ट पर पूरी इंडस्ट्री का प्यार उमड़ पड़ा है।



मनोरंजन

जगत से एक खुशखबरी सामने आई है।

मशहूर टीवी और बॉलीवुड अभिनेत्री करिश्मा

तन्ना और उनके पति वरुण बंगेरा

माता-पिता बन गए हैं। इस जोड़े

के घर एक नन्हे राजकुमार का

आगमन हुआ है। खास बात यह

है कि करिश्मा और वरुण

के घर यह खुशहाली गुरु

पूर्णिमा के बेहद पावन

और पवित्र अवसर

पर आई।



एयरपोर्ट पर रवीना और दिशा का हुआ मिलन

बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन एक बार फिर अपने पशु प्रेम के कारण चर्चा में हैं। दरअसल, हाल ही में मुंबई एयरपोर्ट पर जब उनकी मुलाकात अभिनेत्री दिशा पाटनी से हुई, तो रवीना ने दिशा को अपने पालतू डॉगी से मिलवाया। दोनों अभिनेत्रियों का यह दिल छू लेने वाला वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में रवीना टंडन अपने पालतू डॉगी के साथ एयरपोर्ट पर नजर आती हैं। इसी दौरान वहां से गुजर रही दिशा पाटनी से उनकी मुलाकात होती है। रवीना मुस्कुराते हुए अपने डॉगी को दिशा से मिलवाती हैं, और दिशा भी बड़े प्यार से डॉगी को सहलाती हैं तथा उसके साथ कुछ पल बिताती हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रशंसक रकुल के इस अवतार की जमकर तारीफ कर रहे हैं। पौराणिक ग्रंथों में शूर्पणखा के चरित्र को बेहद जटिल और प्रभावशाली माना गया है। सिनेमाई इतिहास में इस किरदार को अलग-अलग तरीकों से पर्दे पर उतारा गया है, लेकिन ‘रामायणम्’ में रकुल प्रीत सिंह का लुक पूरी तरह से नया और आकर्षक नजर आ रहा है। फैस की प्रतिक्रिया: “अक्सर शूर्पणखा के किरदार को सिर्फ नकारात्मक रूप में देखा जाता है, लेकिन रकुल का लुक यह दिखाता है कि इस किरदार में सौंदर्य, आकर्षण और रहस्य का कितना बेहतरीन मिश्रण है।” दर्शकों का मानना है कि निर्माताओं का रकुल प्रीत सिंह को इस रोल के लिए चुनना एक मास्टरस्ट्रोक साबित हुआ है।

सोशल मीडिया पर ट्रेंड हुआ रकुल प्रीत का लुक

ट्रेलर रिलीज होने के कुछ ही घंटों भीतर #RakulPreetSingh और #RamayanamTrailer ट्रेंड करने लगा। यूजर्स रकुल के स्क्रीन ग्रैस शेयर करते हुए फिल्म निर्माताओं की दूरदर्शिता और कास्टिंग की खुलकर सराहना कर रहे हैं। कई फैस ने कमेंट करते हुए लिखा कि रकुल अब तक की सबसे आकर्षक और ग्रेसफुल शूर्पणखा के रूप में उभरी हैं।



इस दौरान दोनों अभिनेत्रियां आपस में बातचीत करती हुई भी दिखाई देती हैं, जिससे उनके बीच की सहजता साफ झलकती है। दोनों अभिनेत्रियों ने एयरपोर्ट पर बेहद साधारण और आरामदायक लुक अपनाया था। रवीना टंडन एक स्टाइलिश ब्लैक कलर के को-ऑर्ड सेट में नजर आईं, जबकि दिशा पाटनी ने स्लीवलेस ब्लैक टॉप के साथ मैचिंग ट्राउजर पहना था, जो उनके कैजुअल लेकिन चिक अंदाज को दर्शाता है। बता दें कि रवीना टंडन लंबे समय से पशु प्रेम के लिए सक्रिय रूप से काम करती रही हैं। वह अक्सर अपने पालतू जानवरों के साथ तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा कर इस विषय पर जागरूकता बढ़ाती हैं। कुछ समय पहले, रवीना ने अपने प्रशंसकों के साथ एक घटना साझा की थी, जब उन्होंने एयरपोर्ट पर मिले एक लावारिस पिल्ले को बचाया था, जिसका नाम उन्होंने भैरव रखा। इतना ही नहीं, उन्होंने उस पिल्ले के लिए एक सुरक्षित और स्थायी घर भी ढूंढा। इस पूरे रेस्क्यू मिशन की जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से दी, जिससे लोगों को जानवरों की मदद करने के लिए प्रेरणा मिली। रवीना हमेशा लोगों से एडॉप्ट, डोट शॉप यानी जानवरों को खरीदने से बचायें उन्हें गोद लेने की अपील करती रही हैं, ताकि बेघर जानवरों को एक परिवार मिल सके। पिछले साल भी रवीना टंडन ने पालतू जानवरों के साथ यात्रा करने को लेकर अपनी राय खुलकर रखी थी। उन्होंने एयर इंडिया से आग्रह किया था कि वह उन एयरलाइंस से प्रेरणा ले, जो यात्रियों को अपने दो पालतू जानवरों के साथ यात्रा करने की सुविधा देती हैं।



‘ये रिश्ता क्या कहलाता है’ में अभिरा-अरमान की बेटी बनेगी दूल्हन

ये रिश्ता क्या कहलाता है’ के अपकॉमिंग एपिसोड में अभिरा-अरमान की बेटी मायरा अपनी शादी का ऐलान करते दिखाई देने वाली है। कहानी में एक हैरान करने वाला मोड़ देखने को मिलेगा, जब वह अपने करियर को छोड़ दूल्हन बनाने की बात कहती हैं। स्टार प्लस के लंबे समय से चल रहे शो ‘ये रिश्ता क्या कहलाता है’ के आने वाले एपिसोड में आखिरकार वह ‘लीप ट्रैक’ देखने को मिलेगा, जिसका सभी को बेसब्री से इंतजार था। इसमें अरमान और अभिरा को अपनी बड़ी ही रहीं बेटी मायरा की तरफ से एक चौंकाने वाली चुनौती का सामना करना पड़ेगा। मायरा का मानना है कि करियर से ज्यादा शादी जरूरी है और उसका जीवनसाथी ही उसके सभी सपने पूरे कर सकता है।



‘ये रिश्ता क्या कहलाता है’ में आगे देखने को मिलेगा कि अरमान-अभिरा अपनी बेटी मायरा और मुक्ति को अपने करियर पर ध्यान देने और एक सुरक्षित भविष्य बनाने के लिए प्रेरित करने की पूरी कोशिश करते हैं। मुक्ति उनकी बात समझती है और जीवन में कुछ हासिल करने के लिए दृढ़ रहती है। हालांकि, मायरा हमेशा अपने माता-पिता जैसी जिंदगी का सपना देखती है, जहां प्यार के साथ से सब कुछ मुमकिन हो जाता है। अभिरा की प्रेग्नेंसी के बाद अब नया ड्रामा होने वाला है। मायरा को लगता है कि अरमान और अभिरा के मजबूत रिश्ते की वजह से

ही अभिरा कामयाब हो पाई है। इसी सोच के चलते उसे कबीर से प्यार हो जाता है। एक बड़ी लड़की होने के नाते, मायरा कबीर के स्टायल को पसंद करती है और मानती है कि वह काफी हद तक उसके पिता अरमान जैसा ही है। असली समस्या पोद्दार परिवार में तब शुरू होती है, जब मायरा अपने बॉयफ्रेंड कबीर को परिवार से मिलवाती है और उससे शादी करने की इच्छा जाहिर करती है। सब हैरान रह जाते हैं और अरमान सवाल करता है कि वह ऐसी उम्र में शादी के बारे में कैसे सोच सकती है, जो करियर बनाने के लिए होती है।

‘रामायण’ का ट्रेलर बना इंटरनेट सेंसेशन, रिलीज के 5 घंटे में 2.5 मिलियन से अधिक व्यूज

निवेश तिवारी की बहुप्रतीक्षित फिल्म ‘रामायण’ का ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। ट्रेलर ने रिलीज के महज 5 घंटे में 2.5 मिलियन से अधिक व्यूज हासिल कर लिए हैं। इसके साथ ही यह यूट्यूब और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से ट्रेंड कर रहा है। करीब चार मिनट लंबे ट्रेलर में रणबीर कपूर भगवान श्रीराम, यश रावण और साई पल्लवी माता सीता के किरदार में नजर आ रहे हैं।

फिल्म के भव्य सेट, हाई-क्वालिटी वीएफएक्स और सिनेमाई प्रस्तुति ने दर्शकों को प्रभावित किया है। ट्रेलर में राम-रावण युद्ध की झलक और भावनात्मक दृश्यों को खास तौर पर सराहा जा रहा है। सोशल मीडिया

पर फैस इसे भारतीय सिनेमा की अब तक की सबसे भव्य फिल्मों में से एक बता रहे हैं। कई यूजर्स ने फिल्म की विजुअल क्वालिटी, बैकग्राउंड म्यूजिक और कलाकारों की पहली झलक की जमकर तारीफ की है। खासकर यश



के रावण अवतार और रणबीर कपूर के श्रीराम रूपा को लेकर दर्शकों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। निर्माताओं का दावा है कि ‘रामायण’ को अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीक और बड़े पैमाने पर तैयार किया गया है। ट्रेलर

को मिली शानदार शुरुआत से साफ है कि फिल्म के रिलीज होने का इंतजार दर्शक बेसब्री से कर रहे हैं। शुरुआती प्रतिक्रिया को देखते हुए माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में ट्रेलर के व्यूज और रिकॉर्ड तेजी से बढ़ सकते हैं।

‘तारक मेहता का उल्टा चश्मा’ में हॉलीवुड एक्टर टॉम हॉलैंड की एंट्री?

‘तारक मेहता का उल्टा चश्मा’ टीवी का इतना लोकप्रिय शो है कि सलमान खान, शाहरुख खान, अजय देवगन समेत और भी कई बड़े बॉलीवुड स्टार्स अपनी-अपनी फिल्मों के प्रमोशन के लिए इस शो में आ चुके हैं। अब इस शो में स्पाइडर-मैन की एंट्री होने जा रही है। दरअसल, 30 जुलाई को भारत में हॉलिवुड एक्टर टॉम हॉलैंड की फिल्म ‘स्पाइडर-मैन: ब्रांड न्यू डे’ रिलीज हुई है। इसी फिल्म को प्रमोट करने के लिए हमें ‘तारक मेहता’ शो में स्पाइडर-मैन दिखेगे। दरअसल, हाल ही में मेकर्स ने शो से जुड़ा एक प्रोमो वीडियो जारी किया है, जिसमें शो के प्रोड्यूसर असित मोदी सोसायटी वालों से किसी खास मेहमान को इंट्रोड्यूस करते हुए कहते हैं, “जमीन से जब वो आसमान की तरफ छलांग लगाता है, तो उसका कर्तव्य देख वक्त भी ठहर

जाता है।” उसके बाद आसमान में स्पाइडर-मैन नजर आता है। स्पाइडर-मैन को देख सोसायटी वाले दंग रह जाते हैं। उन्हें यकीन नहीं होता है कि उनके सामने स्पाइडर-मैन है। दरअसल, हाल ही में इस शो को 18 साल पूरे हुए हैं। स्पाइडर-मैन को मेकर्स इसी खुशी के मौके पर सराइज के तौर पर पेश करने जा रहे हैं, साथ ही फिल्म का प्रमोशनल भी हो रहा है। इस प्रोमो वीडियो को शेयर करते हुए चैनल की तरफ से लिखा गया, “गोकुलधाम के 18 साल को सिलब्रेट करने आया एक नया मेहमान। मिलिए स्पाइडर-मैन से जल्द ही।” इस प्रोमो वीडियो को देखकर फैस काफी ज्यादा एक्साइटेट हो गए हैं। दरअसल, ‘स्पाइडर-मैन: ब्रांड न्यू डे’ में हॉलीवुड एक्टर टॉम हॉलैंड लीड रोल में हैं। वो स्पाइडर-मैन के रोल में हैं।

गोल्डन ड्रेस में दिशा पाटनी ने ढाया कहर

बॉलीवुड की ग्लैमर क्वीन दिशा पाटनी जब भी सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें पोस्ट करती हैं, तो वे देखते ही देखते वायरल हो जाती हैं। हाल ही में दिशा ने इंस्टाग्राम पर अपनी कुछ बेहद हॉट और बोल्ड तस्वीरें शेयर की हैं, जिन्हें देखकर फैस के पसीने छूट गए हैं। तस्वीरों में दिशा पाटनी गोल्डन शिमरी मेटैलिक चेनमेल मिनी ड्रेस पहने नजर आ रही हैं।

इस आउटफिट का डिजाइन बेहद कट-आउट और डीप-नेक है, जो उनके टॉड फिगर को परफेक्टली फ्लॉन्ट कर रहा है। बैकलेस और साइड कट-आउट स्टायल वाली यह ड्रेस दिशा के बोल्ड फैशन सेंस को बखूबी दर्शाती है। नीयन और वॉर्म लाइटिंग के बैकड्रॉप में ली गई इन तस्वीरों में दिशा का अंदाज किसी अप्सरा से कम नहीं लग रहा है। दिशा पाटनी का यह फोटोशूट सिर्फ उनकी ड्रेस ही नहीं, बल्कि उनके एक्सप्रेशन और पोजिंग स्टायल की वजह से भी चर्चा में है। तस्वीरों में वह एक से बढ़कर एक सिजलिंग अंदाज में पोज देती नजर आ रही हैं। चाहे सोफे पर बैठकर कैमरे को इंटेंस लुक देना हो या बेड पर बैठकर अपनी टोन्ड लेग्स फ्लॉन्ट करना हो, दिशा का हर पोज आत्मविश्वास से भरा है। उनके किलर एक्सप्रेशन ने तस्वीरों में जान फूंक दी है दिशा ने अपने बालों को साफ्ट वेव्स के साथ ओपन रखा है, जो उनके चेहरे पर बहुत सूट कर रहा है। न्यूड लिपस्टिक, स्मोकी आइज और ग्लोईंग-ड्यूई मेकअप के साथ उन्होंने अपने लुक को एलिगेंट और बोल्ड बनाए रखा है। दिशा पाटनी का यह नया अवतार एक बार फिर साबित करता है कि जब बात बोल्डनेस और फैशन की आती है, तो उनका कोई मुकाबला नहीं है। फैस उनकी इन तस्वीरों पर कमेंट्स और लाइक्स की बरसात कर रहे हैं।



‘आर्यभट्ट का जीरो’का ट्रेलर रिलीज़



आगामी हिंदी फिल्म ‘आर्यभट्ट का जीरो’ का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर रिलीज हो गया है। 2 मिनट 38 सेकंड का यह ट्रेलर एक ऐसे आम युवा की असाधारण यात्रा की झलक दिखाता है, जो असफलताओं, टूटें हुए सपनों, प्रेम में हार, पारिवारिक जिम्मेदारियों और समाज के तानों के बीच अपनी पहचान और सम्मान हासिल करने के लिए संघर्ष करता है। पिता-पुत्र के रिश्ते की भावनात्मक गहराई, जीवन की कठिन चुनौतियाँ और कभी हार न मानने का संदेश ट्रेलर को बेहद प्रभावशाली बनाते हैं। ट्रेलर की शुरुआत एक शादी की विदाई के अनोखे दृश्य से होती है, जहाँ दुल्हन सबके सामने अपने पुराने प्रेमी को चूम लेती है। माहौल एक पल के लिए सन्नाटे में बदल जाता है, लेकिन तभी दृष्टा मुस्कुराते हुए कहता है, “बैठ बजाओ ये तो लड़की का भाई है।” इसी अप्रत्याशित और हल्के-फुल्के पल के साथ कहानी दर्शकों को बहुमूल्य श्रीवास्तव उर्फ ‘बग्गू’ की दुनिया में ले जाती है। हिमांशु कोहली द्वारा निभाया गया बग्गू एक ऐसा युवा है जिसकी जिंदगी में कुछ भी आसान नहीं है। प्रेमिका की दूसरी शादी का दर्द, बार-बार परीक्षाओं में असफल होना, पिता के साथ लगातार टकराव और किस्मत के लगातार दिए गए झटके—इन सबके बीच भी वह हार नहीं मानता।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक जावेद सैफी द्वारा शुभम तोमर, 47, बेसमेंट, नवयुग मार्किट, गाजियाबाद उ.प्र. से छपवाकर म.नं. 8 जागृति विहार गुलधर रोड, सेक्टर-23 संजय नगर गाजियाबाद - 201002 से प्रकाशित किया